जून २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

मुझे क्या !

संपादकीय

बालमित्रो,

"मुझे क्या?" इस शब्द का प्रयोग हम कई बार करते हैं, खास तौर पर जब हमें कोई व्यक्ति या वस्तु पराई लगे तब, लेकिन उस समय हम भूल जाते हैं कि यदि कोई हमारे साथ ऐसा बर्ताव करे तो हमें कितना दुःख होगा?

"मुझे क्या?" ऐसा बर्ताव कितना और किस तरह नुकसानदायक हैं, इस विषय पर परम पूज्य दादाश्री की सुंदर समझ इस अंक में दी गई हैं।

तो आओ, ऐसे बर्ताव के खतरों को समझकर इसे अपने जीवन से हमेशा के लिए विदा कर दें।

डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

मुझे क्या !

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... ३
"मुझे क्या?"का परिणाम ४
यह तो नई ही बात है! ८
बस का एक यादगार सफर १०
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १३
अपने आप को परखकर देखो! १६
मीठी यादें १८
आर्टिस्टिक हैन्ड राइटिंग कॉम्पीटिशन का परिणाम १९

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ३
अखंड क्रमांक : ३
जून २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published by :

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by :

Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at :
Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation:
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं......

प्रश्नकर्ता : किसी भी व्यक्ति के प्रति "मुझे क्या !" यह जो भाव है, वह क्या सूचित करता है?

दादाश्री :नालायकी! "मुझे क्या !" क्या ऐसा बोलना चाहिए? यह तो गुनाह है, "मुझे क्या?" ऐसा नहीं बोलना चाहिए। घर में तो ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन बाहर भी नहीं होना चाहिए।

"मुझे क्या !" इससे तो बहुत बड़ा भेद किया, ऐसे कहा जाएगा, संकुचितता (छोटा मन) से "मुझे क्या !" ऐसा ज्यादा होता है। रात को ठंड लगती हो और सामनेवाला ठंड से ठिठुर रहा हो, उसे हम देखते भी है और सिर ढककर सो जाएँ, कि "मैं क्या करूँ, मरने दो, जो करना हो सो करेगा।" हम दो गद्दे लेकर सो गए हों और उसके पास एक भी गद्दा नहीं हो तब भी यदि ऐसा हो कि, "कौन उठेगा, जो होना हो सो होगा, मुझे क्या?" मतलब खुद के स्वार्थ को लेकर औरों के बारे में नहीं सोचते। पर्दा गिरा दें। ऐसा नहीं होना चाहिए, किसी के दुःख में सहानुभूति होनी चाहिए। "मुझे ऐसा हो तो क्या हो?" हर एक बात में ऐसा विचार आना चाहिए। हम दूसरे को सुख देंगे तो हमें सुख मिलेगा ही।

प्रश्नकर्ता : कोई भी काम हो या चीज़ हो तब पता चलता है कि यह उल्टा होगा, लेकिन ऐसा होता है कि मुझे क्या लेना-देना ?

दादाश्री : "मुझे क्या लेना-देना !" रखने से तो पाप लगेगा। किसीका बिगाड़ हो रहा हो, नुकसान हो रहा हो तो हृदय बिलखना चाहिए कि यह मेरे ही नुकसान के बराबर है। धर्मशाला में गए हों तो ऐसा लगता है कि धर्मशाला का माल इस्तेमाल करो न। मतलब जूते पहनकर गद्दे पर चलते हैं, चाय-नाश्ता गद्दे पर बैठकर करते हैं और फिर बिगाड़ते हैं। भीतर ऐसा रहता है कि "मुझे क्या !, धर्मशाला का माल है, हमने तो पूरे पैसे दिए हैं।" मतलब "मेरा माल नहीं है, पराया माल इस्तेमाल कर रहा हूँ" ऐसा वह मानता है लेकिन यह भेद ही अंतराय का कारण बनता है। यह लाइट जलती रहे, तो रहता है कि मुझे क्या? लेकिन यदि यह इलेक्ट्रिसीटी ज्यादा जलेगी तो किसी को कम पड़ेगी। फिर अपने हिस्से में से ही कम होगा। (मतलब कि इलेक्ट्रीसीटी में कटौती होगी।)

खुद को जो अनुकूल हो, ऐसा ही सभी के लिए रखना चाहिए। सोचना चाहिए कि, मुझे दुःख हो रहा है, तो उसे भी दुःख होगा ही! "मुझे क्या !" यह शब्द है ही नहीं हमारी डिक्शनरी में। "मुझे क्या" बोलनेवाले का तो कभी हल नहीं आता।

"मुझे क्या !" का परिणाम

पाठक सर ब्लेक-बॉर्ड पर लिखने के लिए मुड़े, तब आदित्य आलस से जँभाया। "कितनी बोरिंग क्लास है!" कहकर उसने गहरी साँस ली। थोड़ी देर बाद अपने कंपास से वर्तुल निकालकर वह बैंच पर कार्टून बनाने लगा।

"आदि, यह क्या कर रहा है? स्कूल की बैंच को इस तरह खराब मत कर", कवीश ने आदित्य को टोका।

"स्कूल की है, मेरी तो नहीं है न? मुझे क्या ! और तू क्यों इतना इमोशनल हो रहा है। तू पढ़ने में ध्यान रख।" आदित्य उस पर चिढ़ गया।

"वॉट डू यू मीन बाय 'स्कूल की है, मुझे क्या?' तू अपने घर का डाइनिंग टेबल इस तरह खराब करता है?" कवीश ने आदित्य को सामने जवाब दिया।

"ए....ओवरवाइज़....", आदित्य आगे बोलने ही जा रहा था, तभी पाठकसर ने दोनों को खुसफुस करते देख लिया, "साइलेन्स प्लीज़! आदित्य! कवीश!" और दोनों चुप हो गए। थोड़ी देर में रिसेस की बेल बजी।

"टन..टन. .टन..टन..टन..!" जैसे पिंजरे में बंद पंछियों को बाहर छोड़ा हो, ऐसे सभी बच्चे कम्पाउन्ड की ओर दौड़े। पूरे कम्पाउन्ड में शोरगुल मच गया। नाश्ते का टिफिन खत्म करने के बाद भी आदित्य को थोड़ा और खाने की इच्छा हो रही थी। कैन्टीन से वह चिप्स और सोडा ले आया। रिसेस पूरी होने पर आदित्य ने चिप्स के पैकट को मसलकर बॉल बनाया और डस्टबिन की तरफ फेंका। पर पैकट डस्टबिन से एक फुट दूर जाकर गिरा।

"थोड़ा सा चूक गया!" कहकर आदित्य हँसा और क्लास की तरफ दौड़ा। यह देखकर फिर कवीश ने उसे टोका,

वह कारीगर तो अवाक् ही रह गया। उसने ऐसा तो सोचा ही नहीं था!

"अरे, उठाकर डस्टबिन में डाल न! कम्पाउन्ड क्यों गंदा कर रहा है?"

"कवीश! गंदा होता है तो मुझे क्या? रामूकाका साफ कर देंगे। वैसे भी क्लीनिंग उनका काम है, मेरा नहीं" ऐसा कहकर, आदित्य अपनी बेंच पर बैठ गया।

क्लासरूम में दाखिल होते गाँधी सर ने कवीश और आदित्य की बातचीत सुनी।

"गुड आफ्टरनून एवरीबडी", क्लास को विश करके, गाँधी सर ने अपनी किताब टेबल पर रखी। चश्मा ठीक करते हुए बोले, "आज का टॉपिक है - ऊर्जा की बचत लेकिन उससे पहले हर बार की तरह आज भी मैं इस टॉपिक की शुरूआत एक कहानी से ही करूँगा। यह कहानी है, एक कारीगर और उसके सेठ की।"

एक गाँव में एक कारीगर रहता था। वह बहुत कुशल था। बहुत वर्षों तक काम करने के बाद, कारीगर ने काफी पैसे कमा लिए थे। इसलिए अब उसे खुद के लिए एक घर बनाकर रहने की इच्छा हुई।

उसने सेठ से कहा, "अब मैं निवृत होना चाहता हूँ। अब मुझे मेरा खुद का घर बनाकर रहने की इच्छा है।"

सेठ ने कहा : "ठीक है, पर उससे पहले एक अंतिम मकान बनाकर दो। उसके बाद भले ही तुम निवृत हो जाओ।" कारीगर ने बेमन से बात मान ली और बेमन से ही काम शुरू किया।

उसने काम में रूचि ली ही नहीं और पूरे काम की गुणवत्ता बहुत ही कमज़ोर रही। दूसरे कारीगर उसे कई बार टोकते थे, "सेठ ने हमेशा तुम्हारी सभी ज़रूरतों का ध्यान रखा है। तो तुम उनके काम में लापरवाही क्यों कर रहे हो?"

लेकिन कारीगर ने उन लोगों की बात की कोई परवाह नहीं की। वह मन में सोचता, "मुझे क्या ! वैसे भी मेरे लिए यह अंतिम काम है। फिर सेठ उनके रास्ते और मैं मेरे रास्ते। मुझे क्या लेना-देना !"

इस तरह, जैसे-तैसे मन मारकर काम पूरा किया। मकान बन गया। फिर सेठ उसे देखने आए।

सेठ ने कहा : "भाई, पूरी ज़िदगी तुमने मेरे लिए काम किया उसके बदले में तुम्हें एक भेंट देना चाहता हूँ। यह घर अब आज से तुम्हारा, मेरी तरफ से तुम्हें यह छोटी सी भेंट।" वह कारीगर तो अवाक् ही रह गया। उसने ऐसा तो सोचा ही नहीं था! उसे दिल में बहुत पछतावा होने लगा। उसे लगा : " यदि मुझे मालूम होता कि यह घर मेरे लिए बन रहा है तो मैंने इसे बहुत सावधानी से बनाया होता।"

थोड़े विराम के बाद गाँधी सर ने कहा, "जैसे इस कहानी में कारीगर ने मकान बनाते समय उसे पराया समझकर, खुद को ही नुकसान पहुँचाया, वैसे ही जब हम भी किसी वस्तु, व्यक्ति या जगह को पराया जानकर उसे नुकसान पहुँचाते हैं तो अंत में वह हमारे लिए ही नुकसानदायक हो जाता है। किसी भी चीज़ को पराई मानते हैं और उसे बिगाड़ते हैं लेकिन यदि वही चीज़ अपनी हो तो क्या उसे बिगाड़ेंगे? पराई मानते हैं, भेद रखते हैं यही अपनी भूल है।"

कहानी सुनकर आदित्य को अपने बर्ताव पर शर्म आने लगी। उसे ऐसा लगा जैसे उसी को संबोधित करके टीचर ने यह कहानी सुनाई है। सिर झुकाकर वह नोटबुक के अंतिम पन्ने पर चित्र बनाने लगा।

"और अब हम अपने मुख्य टॉपिक पर आते हैं, ऊर्जा की बचत। कौन मुझे इसके उदाहरण देगा?

"वस्तुओं को पराई जानकर, हम उन्हें बिगाड़ें तो हमें किस तरह नुकसान पहुँच सकता है?" टीचर ने क्लास में यह प्रश्न किया।

कवीश ने तुरंत ही हाथ ऊपर किया।

"कवीश, तुम बताओ।"

"सार्वजनिक जगहों पर हम पानी और बिजली की बर्बादी करते हैं तो सालों के बाद शायद हमें ही उसकी कमी पड़ सकती है।" कवीश ने जवाब दिया। इस तरह चर्चा करने में क्लास पूरी होने आई। अंत में सर ने कहा, "कल हम इस विषय पर आगे बात करेंगे। दैनिक जीवन में हम ऊर्जा की बचत के लिए क्या कर सकते हैं, उस

पर सोचना। सभी को इस टॉपिक पर छोटा प्रेजन्टेशन देना होगा।"

स्कूल के बाद, आदित्य और कवीश बातें करते-करते साइकल स्टैन्ड पहुँचे। तभी आदित्य की नज़र क्लासरूम की तरफ गई।

"एक मिनट, मैं आया। खड़े रहना", ऐसा कहकर आदित्य क्लासरूम की तरफ दौड़ा। थोड़ी ही देर में वह हाँफते-हाँफते वापस आया।

"क्या हुआ?" कवीश ने पूछा।

"कुछ नहीं। क्लासरूम की लाइट जलती रह गई थी, वह बंद करने गया था", आदित्य ने धीरे से जवाब दिया।

कवीश ने उसका कँधा थपथपाया।

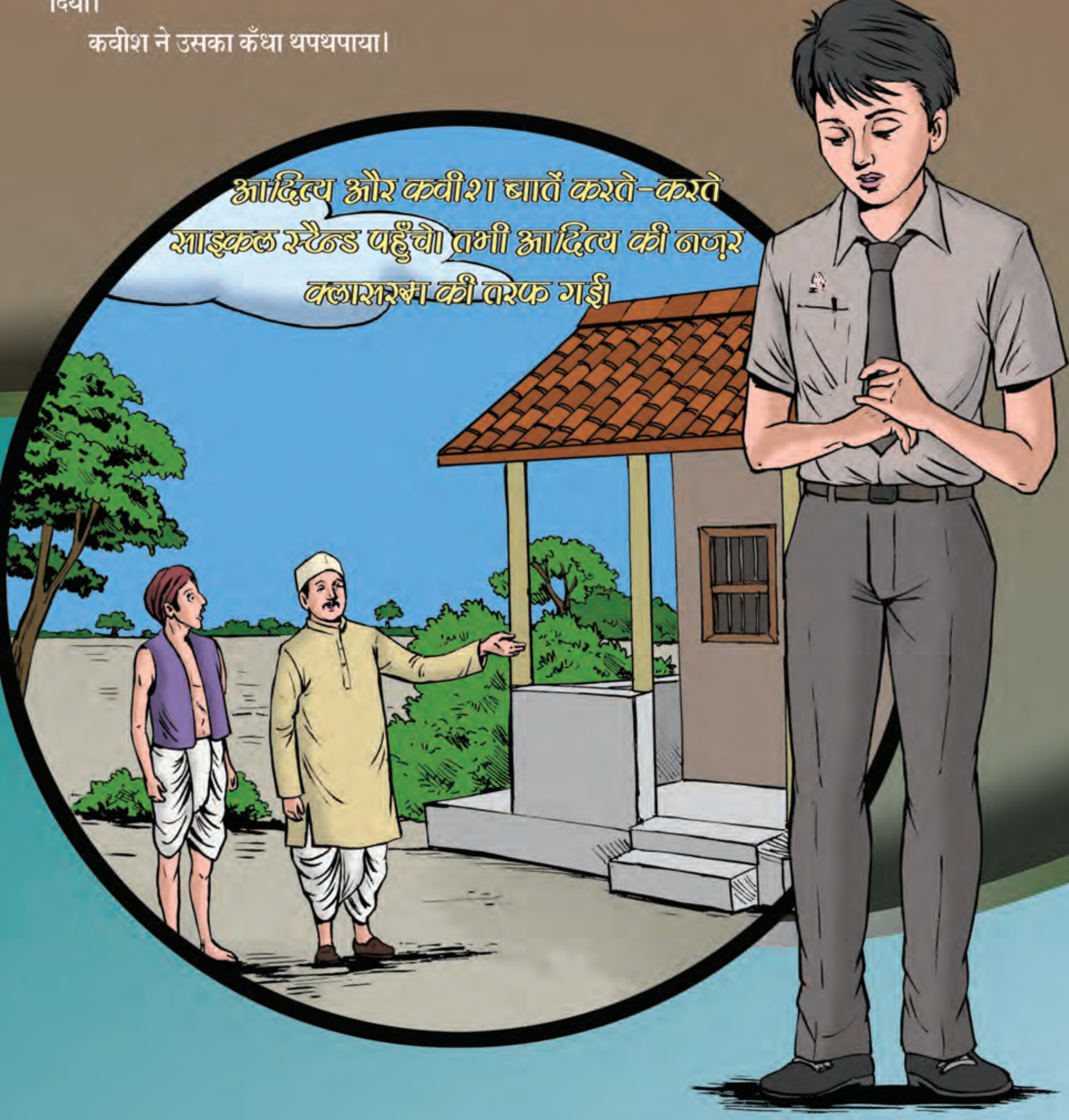

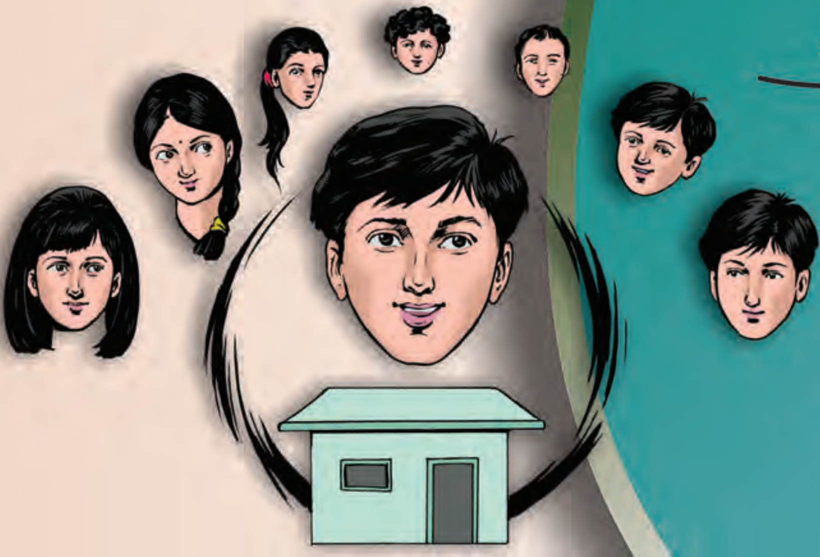

"मुझे क्या" तो सबसे बड़ा भेद है। जितना भेद जाएगा, उतना शुद्ध प्रेम उत्पन्न होगा। "यह पराया है" ऐसी-वैसी मान्यताएँ सब निकाल देनी चाहिए, उसीका नाम प्रेमस्वरूप। एक ही कुटुंब हो ऐसा लगे।

यह तो नई ही बात है!

"मुझे क्या लेना-देना" जिसका यह भाव निकल गया हो तो उसके प्रतिस्पंदन साफ आते हैं, प्योर आते हैं! फिर तुम कहो कि मुझसे यह काम नहीं होगा, तो सामनेवाले को ज़रा भी खराब नहीं लगेगा। जैसे कि तुमसे तुम्हारे मित्र का काम नहीं हो पाया, अगर तुम्हारे मन में ऐसा भाव नहीं हो कि, "मैं क्यों उसका काम करूँ? मुझे क्या लेना-देना?" तो तुमसे काम नहीं हुआ हो तो भी तुम्हारे मित्र को बुरा नहीं लगेगा।

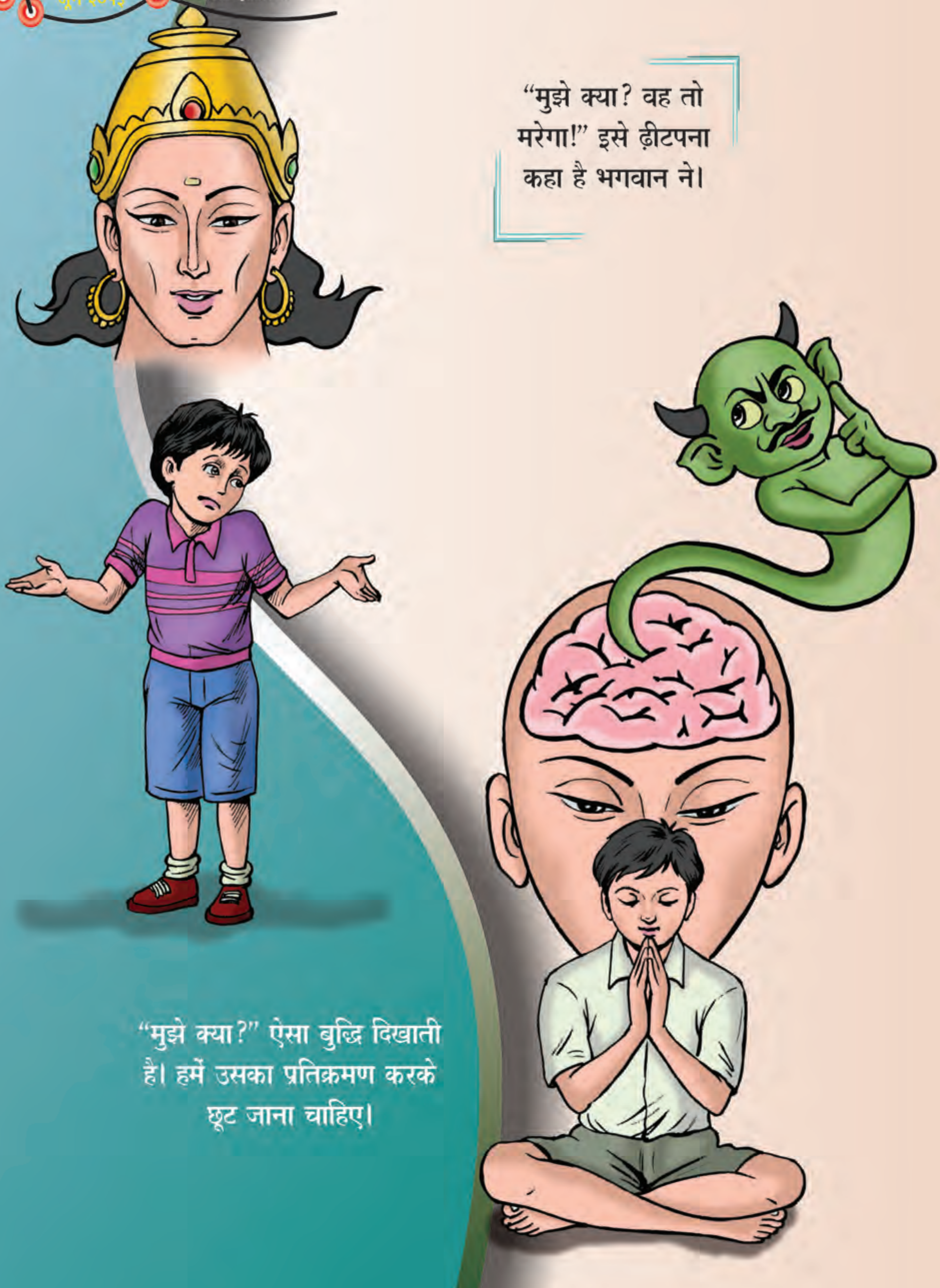
"मुझे क्या? वह तो मरेगा!" इसे ढ़ीटपना कहा है भगवान ने।
"मुझे क्या?" ऐसा बुद्धि दिखाती है। हमें उसका प्रतिक्रमण करके छूट जाना चाहिए।

बस का एक यादगार सफर

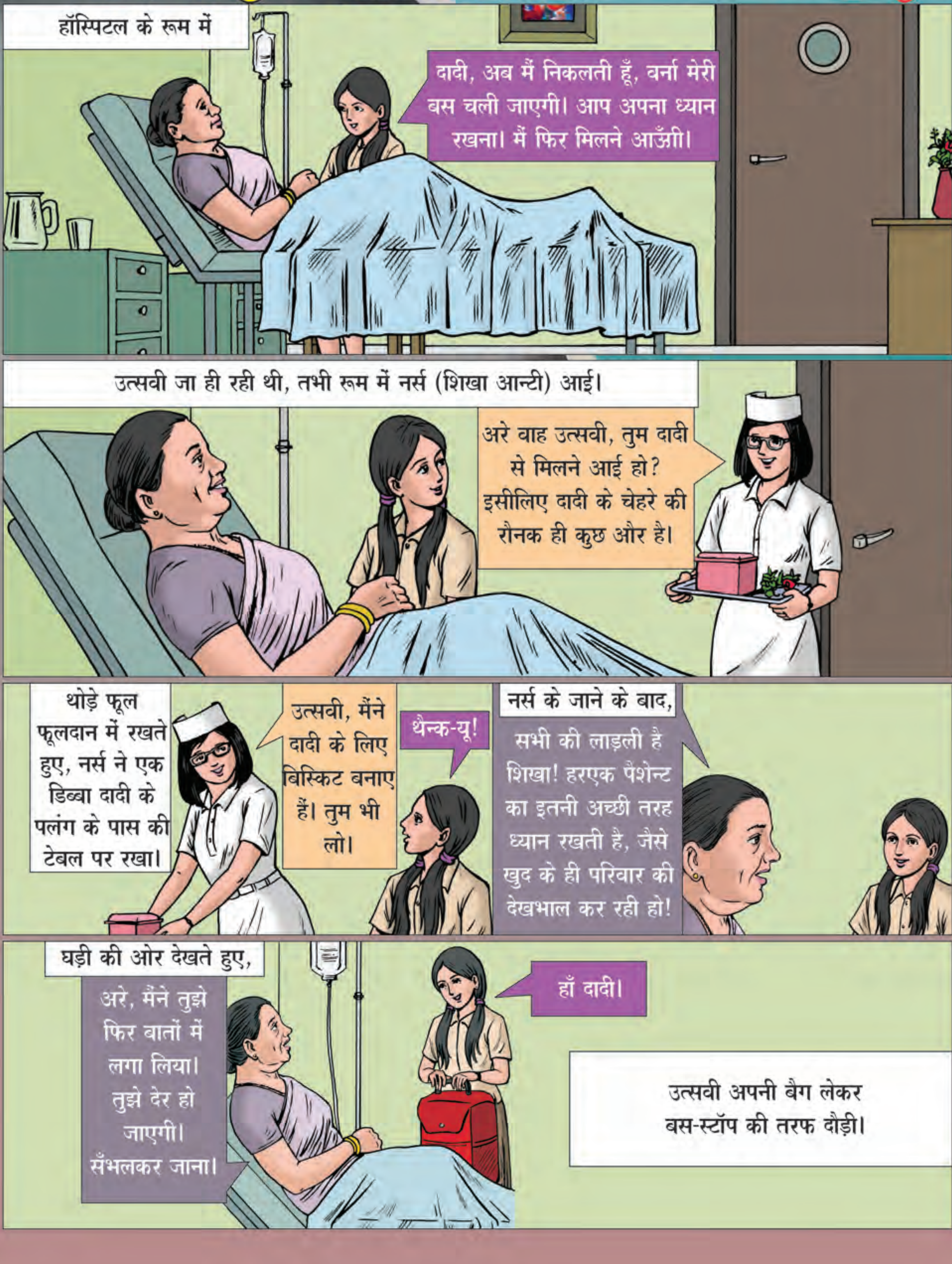

बस स्टॉप पर सभी पैसेन्जरों को बस का इंतज़ार करते देखकर उत्सवी को शांति हुई,
आज तो बहुत थक गई हूँ, बस में सीट मिल जाए तो अच्छा। घर पहुँचने तक एक लंबी नींद निकाल लूँगी।
SALE
तभी उसे बस का हॉर्न सुनाई दिया.....फटाफट वह बस में चढ़ गई।
अहमदाबाद की एक टिकिट देना।
बस के अंदर देखा तो पीछे की एक सीट खाली थी, जैसे-तैसे करके वहाँ पहुँचकर सीट पर बैठ गई। उसने आँखें बंद कर लीं।
तभी बस में जोर से ब्रेक लगा।
ओ माई गॉड!
झटके से उसकी आँख खुल गई। देखा तो आगे की सीट के सहारे खड़ी हुई एक बूढ़ी माँजी गिरने को थीं।
माँजी को मेरी सीट दे देनी चाहिए, उन्हें बहुत तकलीफ हो रही होगी।
उसने आसपास देखा।
किसी को परवाह नहीं तो मैं क्यों दूँ? मुझे क्या लेना-देना? वैसे भी मैं कितनी थकी हुई हूँ।

उत्सवी ने फिर से आँखें बंद करके सोने की कोशिश की लेकिन आँखों के सामने दादी माँ का चेहरा आ गया।
इन माँजी की जगह मेरी दादी होतीं तो? किसीने उन्हें जगह नहीं दी होती तो?
लेकिन बहुत नींद आने की वजह से उत्सवी ने मन से विचार निकाल दिया। थोड़ी ही देर में उसे शिखा आन्टी का चेहरा दिखने लगा।
यदि शिखा आन्टी दादी को पराया समझकर उनकी देखभाल नहीं करतीं तो दादी की क्या हालत होती?
सभी पैशेन्ट्स को शिखा आन्टी प्यारी लगती हैं क्योंकि वे कभी भी अपने और परायों में भेद नहीं रखतीं।
यह विचार आते ही उत्सवी झटके से उठ गई।
आन्टी आप यहाँ बैठ जाइए।
बेटा, मैं तेरी बहुत आभारी हूँ, मुझे लग रहा था कि मैं खड़ी रह पाऊँगी लेकिन अब पहले जैसी ताकत नहीं रही।
ऐसा कहकर वह उत्सवी की सीट पर बैठ गई। उत्सवी उनकी जगह शांति से खड़ी रही। सीट देकर तो उसकी नींद गायब ही हो गई और उसने एक अनोखी ताज़गी और स्फूर्ति महसूस की!

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

यह बात छब्बीसौ वर्ष पहले की है। दशार्ण देश का राजा दशार्णभद्र न्यायी और धर्म प्रेमी था। वह भगवान महावीर का परम भक्त था।

राजा को बार-बार ऐसा लगता, "कब भाग्य जगेगा और कब भगवान के पवित्र चरणों से यह भूमि पावन होगी? उनकी चरणरज से यह जीवन धन्य बनेगा?" चातक जैसे मेघ की राह देखता है, वैसे राजा दशार्णभद्र का अंतर भगवान के आगमन की राह देख रहा था। भगवान के दर्शन के लिए आतुर रहता था। इसी आशा में दिन बीतने लगे।

एक दिन राज्य के कामकाज में व्यस्त राजा को वनपाल ने खबर दी, "स्वामी! अपने राज्य में भगवान महावीर पधारे हैं।"

यह सुनकर राजा का अंतर आनंद से नाच उठा। उन्होंने वहीं से भगवान को भावपूर्वक वंदन किया। राजा भक्ति में भाव विभोर हो गए और उन्हें लगा कि, "ऐसे परम आनंद के अवसर पर पूरी नगरी आनंद में सराबोर हो तो कितना अच्छा!" उन्होंने तुरंत ही राजमंत्री और राजकर्मचारियों को बुलाकर कहा, "राज्य की सारी प्रजा और शोभा (बाजे-गाजे) के साथ मैं कल प्रातःकाल भगवान को वंदन करने जाऊँगा। मंत्रीराज, देखना प्रभु के स्वागत में कोई कमी न रहे, ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता। महापुण्य से आज खुद को और मेरी सर्व संपत्ति को धन्य बनाने की घड़ी आई है!"

सूर्यास्त हुआ और रात हुई। आनंद मग्न राजाजी का अंतर तो मात्र एक ही चिंतवन कर रहा था। कब प्रातःकाल हो और कब संपूर्ण शोभा सहित मैं प्रभु के चरणों में उपस्थित हो जाऊँ?

रात बीत गई, प्रभु दर्शन के लिए जाने का समय आ गया। राज्य के सभी

लोग उसमें शामिल हो गए।

गजदल, अश्वदल, रथदल और पैदल ऐसी चतुरंगी सेना पूरी सुसज्जित होकर खड़ी थीं। राज्यमंत्री, नगर श्रेष्ठि, राजरानियाँ, नगरवधुएँ और प्रजाजन वैभवशाली वेश भूषा धारण किए हुए थे। जैसे कि धरती ने स्वर्ग की शोभा धारण की हो! राजमार्ग अबीर-गुलाल और पुष्पों से सुगंधित हो उठे थे। गगनमंडल ध्वजा-पताका और तोरण से सजा हुआ था। वाद्य यंत्रों के मधुर स्वर चारों तरफ फैल रहे थे। आनंद के घोष के साथ राजहस्तियों ने कदम बढ़ाए और पूरा जनसमूह तालबद्ध होकर आगे बढ़ने लगा।

महोत्सव का ऐसा वैभवशाली स्वरूप देखकर राजा का आनंद अत्याधिक आनंद में बदल गया। आनंद के अतिरेक में राजा को गर्व उत्पन्न हुआ। उन्होंने सोचा, "भला, त्रिलोकनाथ। तीर्थंकर भगवान का ऐसा दिव्य स्वागत किसी ने किया होगा क्या? बड़े-बड़े राजा प्रभु के भक्त तो हैं लेकिन किसी ने स्वागत किया हो ऐसा नहीं सुना। सच में मैंने आज अद्‌भुत काम किया है। "

राजाजी को खुद की भक्ति पर थोड़ा गर्व का रंग चढ़ने लगा। उन्हें खुद ही अपनी भक्ति की अपूर्वता महसूस होने लगी! वह मन ही मन खुद को ही शाबाशी देने लगे, "सच! मेरा यह स्वागत महोत्सव अपूर्व है। न भूतो न भविष्यति, इस स्वागत के आगे तो देवताओं की भी क्या बिसात! सचमुच मेरा यह स्वागत विश्व में अपूर्व, अमर हो जाएगा!"

और इस तरह राजा दशार्णभद्र, प्रभु महावीर के चरणों में आ पहुँचे। प्रभु को वंदन करके पर्षादा में (सभा में) बैठे-बैठे उनके चेहरे पर गर्व छलक रहा था।

उस समय देवताओं के राजा इन्द्र अपनी सभा में बैठे थे। उन्होंने सोचा "सोने जैसा राजा दशार्णभद्र आज अपने आप को मिट्टी में क्यों मिला रहा है? क्या गर्व और अभिमान के बुरे परिणाम उसके ध्यान में नहीं हैं? उनकी भक्ति और आनंद आज सर्वनाश के मुख में जाने की तैयारी में हैं, क्या इसका भी उसे भान नहीं होगा? क्या ज़िंदगी भर की भक्ति को इस तरह क्षणभर में गर्व में विलीन किया जा सकता हैं? नहीं, नहीं। इसका उपाय तो करना ही पड़ेगा!" और देवराज इन्द्र ने भारी अलौकिक ठाठ के साथ स्वयं प्रभु महावीर के दर्शन के लिए जाने का निश्चय किया।

राजा गर्व के आनंद में विचार मग्न बैठे थे, तभी सारा आकाश गूँजने लगा। पूरी पर्षादा स्तब्ध होकर देख रही थी। राजा दशार्णभद्र भी अपने विचार में से चकित होकर आकाश की ओर देखने लगे।

आकाश के पटांगण में अवर्णनीय और दृष्टि हटे नहीं, ऐसे स्वागत की रचना करके देवगण धरती की तरफ आ रहे थे। देवराज इन्द्र के एक-एक ऐरावत की शोभा के आगे विश्व की सभी शोभाएँ फीकी लग रहीं थीं।

राजा दशार्णभद्र यह देखते ही रह गए। जैसे-जैसे देवताओं का ठाठ देखते गए, वैसे-वैसे खुद की अपूर्वता के गुमान का विचार मन से निकल गया। इन्द्र के भव्य स्वागत से राजा के अंतर में व्याप्त गर्वरूपी विष धीरे-धीरे उतरने लगा।

" सोने जैसा राजा दशार्णभद्र आज अपने आप को मिट्टी में क्यों मिला रहा है? "

उन्हें लगा, "अरे, मैं कैसा भटक गया था! मेरे आनंद को मैंने गर्व से कलुषित किया। मैंने मेरे स्वागत को अपूर्व कहा, अजोड़ माना! मैं कैसा मूर्ख! किस तरह मैं मान सकता हूँ कि मेरा स्वागत बेज़ोड़ है।" और धीरे-धीरे राजा के अंतर से गर्व का सारा विष दूर हो गया।

राजा ने सोचा कि, "आज मैंने अपूर्व कार्य करने का गर्व किया, उस गर्व का भले ही नाश हो गया लेकिन अब मुझे मेरा यह जीवन और प्रभु दर्शन सफल हो, उसके लिए कुछ करना है।"

राजा दशार्णभद्र ने सदा के लिए भगवान के चरणों में अपना स्थान स्वीकार लिया। उनके अंतर में आनंद ही आनंद व्याप्त हो गया। देवराज इन्द्र और समस्त सभा इस कार्य की प्रशंसा कर रहे थे।

इन्द्र की अपार रिद्धि देखकर राजा दशार्णभद्र का गर्व मिट गया और दशार्णभद्र का त्याग देखकर देवराज इन्द्र को आश्चर्य हो रहा था।

इन्द्र के भव्य स्वागत से राजा के अंतर में व्याप्त गर्वरूपी विष धीरे-धीरे उतरने लगा।

अपने आप को परखकर देखो...

नीचे दिए गए प्रसंग में से कौन-से पात्र ने, कौन-सी जगह पर "मुझे क्या" का रवैया रखा, उसे ढूँढ निकालो।

विंडो सीट पर बैठकर नंदिनी ने अपना स्कूल बैग अगली सीट के नीचे रखा। खिड़की के बाहर देखा तो आरव हाँफते-हाँफते दौड़ रहा था, आरव ने दोनों हाथ ऊपर करके बस को रोकने का इशारा किया। नंदिनी ने आरव पर से नज़र हटाकर सोचा, "लेट-कमर! आज तो उसकी बस मिस होनी ही चाहिए। तब उसे समझ आएगा कि पंक्चुयल रहना चाहिए।"

रिसेस में राघव को एकदम उदास बैठा हुआ देखकर, आरव उसके पास आया और उसके टिफिन में से एक बाईट लेकर मस्ती में बोला, "अरे यार! इतना टेस्टी खाना है फिर तू क्यों उदास है?"

"अगले हफ्ते मैथ्स का टेस्ट है इसलिए आरव, मैं इस शनिवार को तेरे घर पढ़ने के लिए आऊँ?" राघव ने पूछा।

"नहीं यार, इस वीकेन्ड में मुझे बाहर जाना है," ऐसा कहकर आरव वहाँ से चला गया। चलते-चलते उसने मन में सोचा, "कौन इस डब्बू के पीछे टाइम वेस्ट करे!"

टेस्ट में नंदिनी के पैन की इंक खत्म हो गई। एकदम घबराकर वह बोली, "किसी के पास स्पेयर पैन है? प्लीज़ मुझे दो न।"

श्रेया नंदिनी के आगे ही बैठी थी, उसने अपना ज्योमेट्री बॉक्स थोड़ा-सा खोलकर देखा तो उसका फेवरेट इंक पैन स्पेयर रखा था। उसने तुरंत ही बॉक्स बंद कर दिया, "टेस्ट में स्पेयर पैन नहीं लाना चाहिए? इंक खत्म हो गई तो मैं क्या करूँ?"

शाम को श्रेया की मम्मी ने उनके कुछ दोस्तों और फैमिली को खाने पर बुलाया था। "श्रेया बेटा, मेहमान आते ही होंगे। मुझे डाइनिंग टेबल ठीक करने में मदद कर न", मम्मी ने श्रेया से कहा।

श्रेया पलंग पर लेटी हुई थी। उसने छोटे भाई से कहा, "बंटी, जा मम्मी की मदद कर न, प्लीज़। मुझे बहुत थकान हो रही है।"

"मैं क्यों जाऊँ? आज मदद करने का टर्न तेरा है। तू कर", बंटी ने तुरंत जवाब दिया।

खाना खाते समय आलोक से कोल्ड-ड्रिंक गिर गई। राघव ने देखा, लेकिन अनदेखा करके नज़र घुमाकर श्रेया से बात करने लगा।

अब, यदि इन पात्रों की जगह आप होते तो क्या करते? नीचे दिए गए सोल्यूशन में से योग्य सोल्यूशन खोजकर, टेबल में पात्र के नाम के सामने सोल्यूशन नंबर लिखिए।

१. टेस्ट के बाद, स्पेयर चीज़ें रखने की इम्पॉरटन्स पर नंदिनी को लेक्चर दिया होता।

२. तुरंत ही नंदिनी को मेरा स्पेयर पैन दिया होता।

३. बस में से अँगूठा बाहर निकालकर आरव को "डिंगो!" कहा होता।

४. टाइम-टेबल एडजस्ट करके राघव के साथ मैथ्स टेस्ट की प्रैक्टिस की होती।

५. टाइम वेस्ट किए बिना आलोक का फोटो खींचकर, उसके घबराए हुए एक्सप्रेशन केप्चर कर लिए होते।

६. टर्न टेकिंग के रूल एक पेपेर पर लिखकर, फ्रीज़ पर चिपका दिया होता, जिससे दीदी को दूसरी बार याद रहे।

७. दूसरे दिन भी राघव को मेरे लिए टेस्टी लंच लाने को कहकर उसे समझाया होता कि जब लाइफ में टेस्टी खाना मिले तो टेस्ट-वेस्ट का टेन्शन नहीं लेना चाहिए।

८. बस ड्राइवर को तुरंत ही बस रोकने की रिक्वेस्ट की होती।

९. किचन से पोंछा लाकर, आलोक की मदद की होती।

१०. "मुझे थकान हो रही हो और काम करना हो तो कैसा लगता?" ऐसा सोचकर दीदी की मदद की होती।

पात्र का नाम	सोल्यूशन नंबर
१)	....
२)	....
३)	....
४)	....
५)	....

जवाब : नंदिनी-८, आरव-४, श्रेया-२, बंटी-१०, राघव-९

मीठी यादें

एक बार नीरू माँ राजकोट सत्संग के लिए गईं थीं। सत्संग के बाद नीरू माँ को अहमदाबाद वापस आना था। वे जिन महात्मा के घर रुके थे, उनकी दो छोटी बेटियाँ थीं। नीरू माँ के वहाँ से जाने के समय वे दोनों सो रही थीं। उनकी मम्मी दोनों को उठाने जा रही थीं लेकिन नीरू माँ ने उन्हें उठाने से मना कर दिया, लेकिन नीरू माँ जिनके घर रहे हों उस घर के हर एक व्यक्ति को आशीर्वाद दिए बिना जा सकती थीं?

दोनों बहनें सो रही थीं उनके बीच में थोड़ी सी जगह थी। नीरू माँ धीरे से उन दोनों के बीच में जितना गेप था किसी तरह उसमें समा गईं और उनके सिर पर हाथ रखकर उनकी विधि की, आशीर्वाद दिए और उनकी मम्मी से कहा, "चलो याद रहे इसलिए फोटो खींच लो।" महात्मा बहन ने फोटो खींचा और फिर नीरू माँ गईं।

दोनों बहनें उठीं तो नीरू माँ को न देखकर रोने लगीं। उनकी मम्मी ने कहा, "चिंता मत करो, नीरू माँ तुम्हारे साथ फोटो खिंचवाकर गईं हैं और आशीर्वाद देकर गईं हैं।" दोनों बहनें एकदम खुश हो गईं।

अक्रम एक्सप्रेस के पाठकों के लिए.....

बालमित्रों,

हर महीने हम मिलते तो हैं ही लेकिन मैं तुम्हें पूछना तो भूल ही जाता हूँ। तो चलो, आज पूछ ही लेता हूँ। मित्रो, आपको अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना अच्छा लगता है? अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने के बाद तुम्हारे जीवन में कैसा परिवर्तन अनुभव कर रहे हो? वह हमें ज़रूर बताना ताकि हमें सबसे अच्छा अक्रम एक्सप्रेस बनाने में प्रोत्साहन मिले। आपके अनुभव हमें नीचे दिए गए एड्रेस या इमेल आइडी पर ज़रूर से भेजना।

बालविज्ञान विभाग, त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
मु.पो.- अडालज, जि. - गांधीनगर - ३८२४२१, e-mail: akramexpress@dadabhagwan.org

मित्रो,

"आर्टिस्टिक(कलात्मक) हैन्ड राइटिंग कॉम्पीटिशन" में हिस्सा लेनेवाले सभी बच्चों को बहुत बहुत बधाई। हरएक की कोशिश प्रशंसनीय है। हर एक विजेताओं का इनाम उनके घर भिजवा दिया जाएगा। आशा है कि इसी तरह आप हरएक स्पर्धा में हिस्सा लेते रहेंगे।

७ से ९ वर्ष

प्रथम इनाम
नामः राच्छ किंजल अश्विनभाई

द्वितीय इनाम
नामः राच्छ चांदनी किशोरभाई

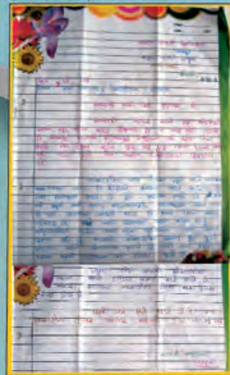

१० से १२ वर्ष

प्रथम इनाम
नाम : ताव्टी निरव रमणीकभाई
उम्र - १२

द्वितीय इनाम
नामः साक्षी बी. सेठ
उम्र - १२

द्वितीय इनाम
नामः जीवाणी दृष्टि बिपीनभाई
उम्र - १२

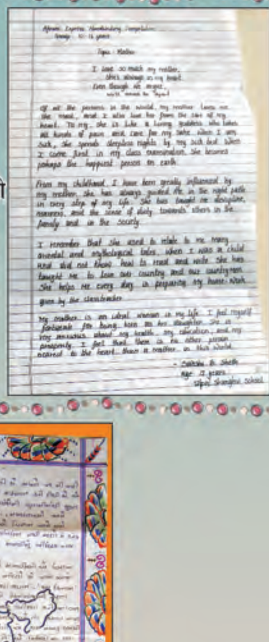

१३ से १५ वर्ष

प्रथम इनाम
नामः ख्याति राजपरा
उम्र - १४

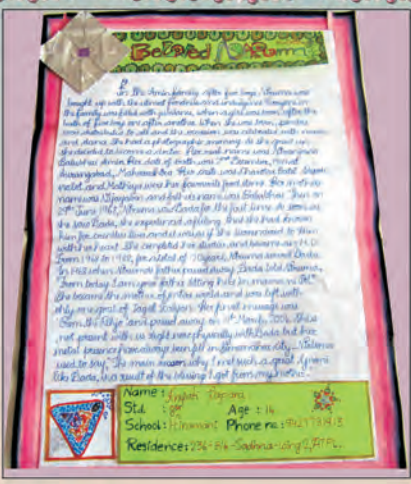

द्वितीय इनाम
नामः प्रजापति दर्शना भीखाभाई
उम्र - १४

Akram Express

June 2013
Year : 1, Issue : 3
Conti. Issue No.:3

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

अडालज में आयोजित पूज्यश्री के षष्ठिपूर्ति महोत्सव की झलक

षष्ठिपूर्ति महोत्सव की शुरूआत करते पूज्यश्री

केक काटते पूज्यश्री

पूज्यश्री को बर्थ डे कार्ड देते बेबी एम.एच.टी. के बच्चे

एल.एम.एच.टी. के बच्चों द्वारा आयोजित विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक

खास बेबी एम.एच.टी. एज ग्रुप के लिए "कौन मेरा फ्रेन्ड बनेगा?" का उद्घाटन करते पूज्यश्री

अक्रम एक्सप्रेस के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##**

अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat C